Year 01 | Vol. 04

डेल्फ़िक डाइजेस्ट

DELPHIC DIGEST

QUARTERLY NEWSLETTER OF DELPHIC COUNCIL OF RAJASTHAN

OCT. 2022

Hello from Rajasthan

Delphic Council of Rajasthan is glad to present the fourth edition of its newsletter, Delphic Digest.

As we put Covid-19 behind us, DCR has changed gear and graduated to an altogether new level in number and quality of events. Now every month along with an online session of Delphic Dialogues, team DCR is organising at least one physical event.

Here is a glimpse of the variety of our event canvas as also the energy and enthusiasm of Team DCR under the leadership of President Ms. Sreya Guha and Secretary General Dr. Jitendra Kumar Soni. We are also grateful for the affection received from respected members of various State Councils, the Indian Delphic Council & the International Delphic Council.

DCR is focusing its activities on all six art forms: Visual, Social, Ecological, Acoustic, Performing and Lingual. To spread the Delphic movement wider, we are now reaching to smaller cities and towns of Rajasthan such as Alwar, Sriganganagar and Anoopgarh.

The editorial team looks forward for your valuable feedback and suggestions.

Nishant Jain, Furqan Khan, Shipra Sharma, Naveen Tripathi & Rahul Sood

DELPHIC DIALOGUE

वर्चुअल टॉक सेशन
“राजस्थानी सिनेमा - समस्या और सम्भावना”

23 अप्रैल 2022

click to watch session video

डेल्फ़िक कांउसिल ऑफ राजस्थान द्वारा “राजस्थानी सिनेमा - समस्या और सम्भावना" नामक वर्चुअल टॉक सेशन का आयोजन किया गया। यह डेल्फ़िक डायलॉग्स की कड़ी का सत्ताईसवां कार्यक्रम था।

राजस्थानी भाषा की फिल्मों को सरकारी संरक्षण के साथ ही अपने स्तर में भी सुधार करना होगा ये बात प्रसिद्ध फिल्म वितरक श्री नन्द किशोर जालानी द्वारा कही गई । जालानी ने ये भी कहा कि राजस्थान में रहने वाले लोग राजस्थानी भाषा में बात करते हुए झिझकते हैं, इससे राजस्थानी फिल्मों के प्रति लगाव नहीं पनप पाता और राजस्थानी फिल्में सिर्फ छोटे कस्बे में ही चल पाती हैं, जिसके कारण फिल्म निर्माण पर असर पड़ता है।

राजस्थानी फिल्मों के अभिनेता और

डॉक्युमेंट्री निर्माता राहुल सूद ने कहा कि राजस्थान में टैलेंट की कोई कमी नहीं है और ना ही अच्छी स्क्रिप्ट या अभिनेताओं की, परन्तु धन लगाने वाले निर्माताओं की अरुचि के कारण राजस्थानी भाषा की फिल्मों को वो स्थान नहीं मिल रहा जो उसे मिलना चाहिये। राहुल सूद ने कहा कि राजस्थानी भाषा का कोई चैनल भी नहीं है जिसके कारण राजस्थानी फिल्मों को प्रचार का उचित प्लेटफार्म नहीं मिल पाता। उन्होंने ये भी कहा कि तीसरी भाषा के रूप में राजस्थानी भाषा को पढ़ाया जाना चहिए जिससे बड़े शहरी क्षेत्रों में राजस्थानी भाषा के प्रति आकर्षण और लगाव बढ़ेगा।

इस वार्ता में राजस्थानी फिल्मों की उपेक्षा उसकी दिशा और दशा पर दोनों वार्ताकारों ने विस्तार से चर्चा की । वार्ता का संयोजन डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान के सदस्य फुरक़ान खान द्वारा किया गया।

दोनों ही वार्ताकारों का ये मानना था कि राजस्थानी फिल्मों की संभावना बहुत अच्छी है बस कुछ प्रयास सरकार करें और कुछ हिम्मत निर्माता दिखाएं। राजस्थान सरकार राजस्थानी फिल्मों पर अनुदान बढ़ाये, सिनेमा हॉल को एक निश्चित संख्या में राजस्थानी फिल्मों को दिखाने के लिए पाबंद करे, शूटिंग के लिए समस्त स्थल सस्ती दरों पर उपलब्ध करवाएं और निर्माताओं को प्रोत्साहित करें।

A DISCUSSION ON

“तमाशा परम्परा - 200 सालों का रोचक सफ़र”

14 मई 2022

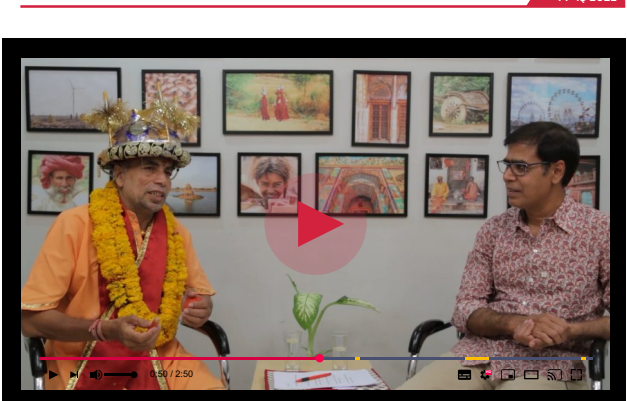

click to watch session video

डेल्फ़िक डायलॉग्स के 28वें सत्र में पारंपरिक तमाशा कला के जाने-माने कलाकार श्री दिलीप भट्ट से डीसीआर के सदस्य नवीन त्रिपाठी ने परिचर्चा की।

इस परिचर्चा के दौरान श्री दिलीप भट्ट ने 200 वर्ष पुरानी तमाशा परंपरा के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि तमाशा एक तरह की नाट्य शैली है जिसमें संगीत, गायन, भाव, रस कथा और शिक्षा, यह सब है। उनके परिवार में रेवती नाथ जी भट्ट ने सबसे पहले गायन की शुरूआत की। इसके बाद बंशीधर जी भट्ट ने गायन के साथ तमाशा परंपरा शुरू की। इनके बाद में ब्रिजपाल जी, फूल जी, मन्नू जी और अपने पिता गोपी भट्ट जी के बाद दिलीप भट्ट जी इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

दिलीप भट्ट जी पीछे 30 सालों से इस परंपरा को विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से देश-दुनिया में पहुंचाया है। परिचर्चा के दौरान दिलीप भट्ट ने लहरिया गायन, पहाड़ी भोपाली राग में गणेश वंदना और गोपी चंद भर्तहरी की कथा प्रस्तुति भी दी।

जेकेके में गूंजी भपंग स्वरलहरियां

28 मई 2022

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान द्वारा जवाहर कला केंद्र जयपुर में अलमस्त जोगी कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में भपंग वादक जुम्मे खां मेवाती की भपंग स्वर लहरियों से कृष्णायान सभागार गूंज उठा। अलवर के पिनान गाँव के प्रसिद्ध भपंग वादक कलाकार जुम्मे खां मेवाती (जुम्मा जोगी) ने भेद तेरा नहीं जाना, तेरी अजब निराली शान, धन-धन तेरी कारीगरी जैसे गीतों से जीवन की सच्चाई को बयां किया।

कार्यक्रम में प्रमुख शासन सचिव, कला एवं संस्कृति तथा जेकेके की महानिदेशक गायत्री राठौड़ ने कहा कि राजस्थान में कला संस्कृति एवं लोक संगीत की समृद्ध परम्परा हैं। डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान भी इसे आगे बढ़ाने एवं वैश्विक पहचान देने में जुटा हैं, जेकेके भी इसमें पूरा सहयोग करेगा। डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान की अध्यक्ष आईएएस श्रेया गुहा ने कहा कि भपंग वाद्ययंत्र मेवाती लोक संस्कृति की धरोहर एवं पहचान है।

भपंग एक तार का वाद्य यंत्र है जिसकी उत्पत्ति शिव जी के डमरू से मानी जाती है। मेवात क्षेत्र के मुस्लिम जोगी इसके वादन के साथ ही लोक गीत भी अपने अनोखे अंदाज में सुनाते हैं। इस कार्यक्रम में जुम्मे खां मेवाती की भपंग वादन की प्रस्तुति में उनके रूप के 5 कलाकार राजेश, शमशु खान, छलिया खान रामवतार, मासूम खान ने चिमटा, हारमोनियम, ढोलक, भपंग और मंजीरे पर इनका साथ दिया।

Screening of Award winning Documentary film "Mazar-E-Laila Majnu" in Sriganganagar

10 June, 2022

Delphic Council of Rajasthan organised its 8th Off-line event the Screening of Award winning Documentary film "Mazar-E-Laila Majnu" in Sriganganagar Town on 10th June 2022.

DCR organised the Screening of Award winning Documentary film Mazar-E-Laila Majnu in association with Rastriya Kala Mandir at Choudhary Ramjas Kala Auditorium in Sriganganagar.

This film Director & DCR Member Sh. Rahul Sood was present in the event. District Collector Ms. Rukmini Riar Shiag IAS was the Chief Guest & the screening was attended by many art lovers of Sriganganagar District.

Ms. Rukmani Riar in her speech not only appreciated the film but also the efforts of DCR President Ms Sreya Guha for Promoting & Protecting Art & Culture.

The Documentary is based on a Mausoleum which is situated in Anoopgarh Tehasil of Sriganganagar District & famous for its annual fair held between 11th to 15th June. Keeping this in mind the screening was scheduled on 10th June. Wonderful coverage was given in all the newspapers of Sriganagnagar.

DELPHIC DIALOGUES

Kishangarh miniature painting through contemporary eyes

11 June, 2022

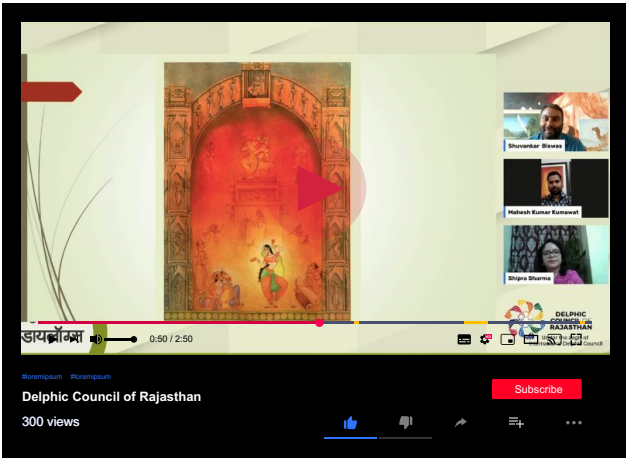

click to watch session video

डेल्फ़िक डायलॉग्स के 29वें सत्र में किशनगढ़ शैली एवं पेंटिग में वाश तकनीक पर किशनगढ़ शैली के चित्रकार महेश कुमार कुमावत एवं आईसीसीडी के सहायक प्रोफ़ेसर शुवांकर बिस्वास के मध्य परिचर्चा की गई।

इस परिचर्चा का केंद्र बिंदु रहा किशनगढ़ शैली, वाश तकनीक एवं लोक कला में लोक आत्मा का चित्रण एवं समसामयिक विषयों का चित्रकर्म में प्रकटीकरण। महेश कुमार कुमावत को उनकी किशनगढ़ शैली व वाश तकनीक द्वारा बनी पेंटिंग वात्सल्य हेतु राष्ट्रीय कालिदास पुरस्कार 2007 से भी नवाज़ा जा चुका है।

किशनगढ़ शैली के बारे में जानकारी देते हुए श्री कुमावत ने बताया की किशनगढ़ चित्रशैली का विकास महाराजा रूप सिंह (1643-1658) के समय आरम्भ हुआ और महाराजा सांवतसिंह (1748-1764) के समय विकसित हुआ जो नागरीदास के नाम से विख्यात है। यह समय किशनगढ़ शैली का स्वर्ण युग माना जाता है। महाराजा सांवतसिंह के समय

ही किशनगढ़ चित्रशैली के प्रसिध्द चित्र बनाए गए। इसके बाद विश्व प्रसिद्ध राधा (बणी-ठणी) की कृति का चित्र कलाकार निहालचंद ने सन् 1778 में बनाया था। किशनगढ़ की यह 'बणी-ठणी' चित्रकला शैली पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। भारतीय मोनालिज़ा "बनी-ठनी" के बारे में कुमावत ने बताया कि बनी-ठनी का चित्रांकन कला द्वारा काव्यात्मकता को प्रदर्शित करने जैसा ही है। किशनगढ़ शैली में कला, प्रेम और भक्ति का सर्वांगीण विकास दिखाई देता है।चेहरे लंबे ,कद लंबा, नाक नुकीली और अंगुलियों को पतला दर्शाया जाता है। शुवांकर बिस्वास द्वारा भारतीय एवं पाश्चात्य कला में अंतर पूछने पर कुमावत ने कहा कि पाश्चात्य कला में यथार्थवाद का बोलबाला रहा है जबकि भारतीय चित्रकला के चित्रकर्म में आदर्शवाद अधिक प्रभावी नज़र आता है। सत्र की संचालनकर्ता शिप्रा शर्मा के उनके कार्यों में इस्तेमाल तकनीक पर चर्चा करते हुए कुमावत कहते है की उनकी चित्रकला किशनगढ़ शैली एवं वाश तकनीक का समावेश है। वॉटर कलर्स की पेंटिंग्स को पानी से धोकर शेड्स करने की अनोखी तकनीक वॉश पेंटिंग कहलाती है। जापान से उद्भव होकर यह विशिष्ट तकनीक बंगाल से होते हुए भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कलाकारों द्वारा अपनाई गई। सटीक विधि व सावधानी से धुलाई उपरांत भावनाओं को पेंटिंग पर एक अलग अहसास के साथ दिखा पाना ही इसकी विशेषता है। कला के माध्यम से समसामयिक विषयों को प्रकट करने पर कुमावत एवं बिस्वास ने सहमति जताते हुए स्वीकार किया की कोई भी कला समाज के लिए तभी उपयोगी है जब वह समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को अंगीकार करते हुए समाजहित से जुड़े विषयों को भी कला के माध्यम से उठाएँ एवं इन लोक कला में लोक आत्मा का चित्रण करें।

Screening of Award winning Documentary film "Mazar-E-Laila Majnu" in Anoopgarh

12 June, 2022

Delphic Council of Rajasthan organised its 9th Off-line event the Screening of Award winning Documentary film "Mazar-E-Laila Majnu" in Anoopgarh Tehasil of Sriganganagar Town on 12th June 2022.

DCR organised the Screening of Award winning Documentary film Mazar-E-Laila Majnu in association with Dashera Committee Anoopgarh at Dashera Ground in Anoopgarh.

This film Director & DCR Member Sh. Rahul Sood was present in the event. Zila Pramukh of Sriganganagar Sh. Kuldeep Indora was the Chief Guest. A big LED screen was installed in the Dashera Ground of Anoopgarh & the film was viewed by many locals of Anoopgarh Tehasil.

Sh. Kuldeep Indora thanked Sh. Rahul Sood & Delphic Council of Rajasthan for making the local residents feel proud & also for bringing Anoopgarh on International map through this film.

The Screening was kept in Anoopgarh because the Documentary film is based on Mausoleum of famous Love Legends Laila & Majnu which is situated in Anoopgarh Tehasil & is famous for its annual fair held between 11th to 15th June. The film was liked & appreciated by the locals & wonderful news coverage was given in all the newspapers of Anoopgarh.

2 days Art Exhibition & Demonstration "Rang Saar"

25-26 June 2022

Delphic council of Rajasthan had organised its 10th Off-Line Event, a 2 days Art Exhibition & Demonstration "Rang Saar" at Surekh Art Gallery at Jawahar Kala Kendra on 25th & 26th June.

The exhibition was inaugurated by Sh. Ramesh Prasanna, Secretary-General, International Delphic Council and Sh. Sandeep Verma I.A.S, Chairman & managing Director Rajasthan State Road Transport Corporation (RSRTC).

Fifteen well known artists had participated in the exhibition. They were- Padamshree Syed Shakir Ali, Sh. Sandeep Verma, Sh. Subroto Mondal, Sh.

Virendra Bannu, Sh. Sumit Sen, Sh. Amit Kalla, Sh. Rajendra Prasad, Sh. Shuvankar Biswas, Sh. Mahesh Kumawat, Sh. Hansraj Chitrabhoomi, Sh. L.N. Naga, Ms. Urmila Yadav, Ms. Devika Shekhawat, Ms Monika Jalwaniya & Ms. Priyanka Sokhal.

Different style of works was displayed like traditional miniature painting, abstract painting, semi abstract, realistic, wash painting. The exhibition was curated by DCR Member Sh. Shuvankar Biswas. The highlight of the exhibition was Live demonstration of water painting was given by Sh. Mahesh Kumawat on 25th and live portrait demonstration on oil was given by Sh. Shuvankar Biswas on 26th.

President DCR Ms. Sreya Guha and Secretary General Sh. Jitendra Kumar Soni graced the occasion. Members of DCR Sh. Furqan Khan, Ms. Shipra Sharma, Sh. Rahul Sood & Ms. Manisha Gulyani were also present.

DELPHIC DIALOGUES

'DCR@1 : The Road Ahead...an international webinar to commemorate one year of Delphic Council of Rajasthan

July 09 2022

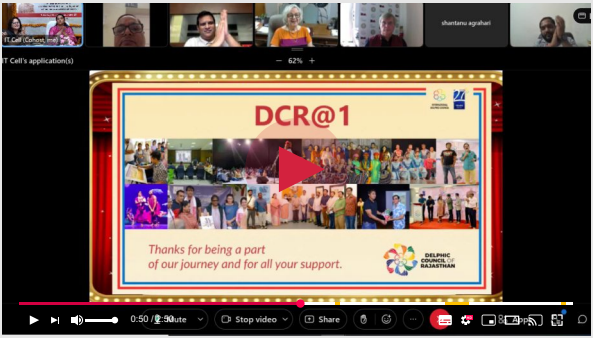

#loremipsum #loremipsum

Delphic Council of Rajasthan

300 views

Subscribe

click to watch session video

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान का एक वर्ष पूरा होने पर इंटरनेशनल वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार में डीसीआर की पिछले एक वर्ष में की गई गतिविधियों तथा डेल्फ़िक मूवमेंट की भविष्य की कार्ययोजना पर चर्चा की गई। इंडियन डेल्फ़िक काउंसिल के सचिव श्री शांतनु अग्रहारी ने बताया गया कि जनवरी 2023 से डेल्फ़िक के स्टेट गेम्स की शुरूआत कर 2023 में ही नेशनल गेम्स का आयोजन किया जाएगा।

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान की अध्यक्ष श्रीमती श्रेया गुहा ने बताया कि डीसीआर द्वारा गत वर्ष में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गए हैं जिन से राजस्थान की लोक कला, संगीत व संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य के साथ साथ कलाकारों की

भागीदारी भी सुनिश्चित की गई । इंटरनेशनल डेल्फ़िक काउंसिल के अध्यक्ष जे. क्रिस्चियन बी क्रिश्च ने टेक्नोलॉजी और रिसर्च के जरिए डेल्फ़िक मूवमेंट को बढ़ावा देने का आह्वान करते हुए डीसीआर की ओर से पिछले एक वर्ष में की गई गतिविधियों के लिए श्रीमती श्रेया गुहा व राजस्थान टीम को साधुवाद दिया। डीसीआर महासचिव जितेंद्र कुमार सोनी ने डीसीआर की पिछले एक वर्ष की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया।आई डी सी महासचिव रमेश प्रसन्ना ने विभिन्न प्लेटफार्म के माध्यम से युवाओं को मूवमेंट से जोड़ने पर जोर दिया। एम्फिकटियोनी सदस्य रोबर्टा विलियम्स ने डेल्फ़िक मूवमेंट के एथिक्स पर उद्बोधन दिया। इंडियन डेल्फ़िक काउंसिल के अध्यक्ष एनएन पांडेय ने डेल्फ़िक मूवमेंट के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य पर अपने विचार रखे।डीसीआर के सदस्य श्री फुरकान खान द्वारा संचालित 'ओपन हाउस डिस्कशन' में डेल्फ़िक गतिविधियों को बढ़ाने पर और वर्ष 2023 में प्रस्तावित नेशनल व स्टेट गेम्स की शुरूआत पर विचार-विमर्श हुआ। डीसीआर की कोषाध्यक्ष शिप्रा शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

A DISCUSSION ON

राजस्थान की लोक संस्कृति और संत परम्परा

30 जुलाई, 2022

click to watch session video

जीवन को उत्सव के रूप में जीना सिखाता है राजस्थान... राजस्थान का यह शाब्दिक चित्रण ऑनलाइन डेल्फ़िक डायलॉग की सीरीज के 31वें सत्र में आमंत्रित वक्ता गोपाल सिंह द्वारा किया गया। "राजस्थान की लोक संस्कृति और संत परम्परा" विषयक सत्र में लोकायन संस्था के संस्थापक गोपाल सिंह से आईएएस निशांत जैन द्वारा चर्चा की गई। बीकानेर संभाग से ताल्लुक़ रखने वाले गोपाल सिंह ने राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियों और कला-संगीत पर चर्चा करते हुए बताया की राजस्थान एक अनूठा प्रदेश है और मरुस्थलीय वातावरण की कठिनता को जीवन उत्सव के रूप में मनाना ही यहाँ की विशेषता है। यहाँ कला के माध्यम से उपजा मानवीय मूल्यों का हराभरापन ही इसे विशेष बनाता है। यहाँ के प्रत्येक आँचल में विभिन्न कला व संगीत विधाओं की भरमार है। उन्होंने इस ऑनलाइन सत्र में विभिन्न वाद्ययंत्रों जैसे सारंगी, कमायचा, तम्बूरा, रावणहत्था, इकतारा, मोरचंग अलगोजा, मशक, डफ, जल तरंग, सुरतरंग, मंजीरे आदि के बारे में श्रोताओं को रोचक जानकारियाँ दी। निशांत जैन द्वारा 'भक्ति काल एवं संत परम्परा के राजस्थान पर प्रभाव' के बारे में पूछे गए प्रश्न पर गोपाल सिंह ने

बताया कि प्रत्येक सदी में हमें संतों का सानिध्य प्राप्त हुआ है। जैसे दादू, कबीर, मीरा, रैदास इत्यादि और इन सभी ने भक्ति और प्रेम के माध्यम से लोगों में आत्मविश्वास भरने एवं उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ने में बड़ा योगदान दिया है। राजस्थान में महिला एवं पुरुष संतों की वाणी (बानी) का व्यापक प्रभाव पड़ा है। आज भी उनकी बानी का असर गाँव-गाँव में जनमानस पर गहराई से दिखाई देता है।

उन्होंने मीरा बाई की बेबाक़ी निडरता से उपजे प्रभावों पर चर्चा करते हुए कहा कि समाज में व्याप्त अवधारणाओं से संघर्ष करने, मिथकों को तोड़ने व अपने अधिकारों के लिए निडरता से डटे रहना मीरा बाई की देन है और यह उस सदी से लेकर वर्तमान तक भी प्रासंगिक है।

निशांत जैन द्वारा ज्ञान व प्रेम की दो परम्पराओं के मिलन पर चर्चा की गई, जिस पर गोपाल सिंह ने उदयपुर संभाग की भूरी बाई व नूरी बाई के उदाहरण से संत व सूफ़ी परम्परा के मिलन को वर्णित किया।

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान लोक कला, संगीत व संस्कृति संरक्षण एवं संवर्धन के अपने उद्देश्य के प्रति निरंतर कार्यरत है और इस सेशन में साथ DCR ऑनलाइन डेल्फ़िक डायलॉग को आरम्भ हुए एक वर्ष पूर्ण हो गया है।

गौरतलब है कि डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान कला को प्रोत्साहित व संरक्षण करने में एक प्लेटफोर्म की तरह कार्य कर रहा है जिससे न केवल विलुप्त होती कलाओं को आधार मिलेगा बल्कि नई पीढ़ी के लिए कला और संस्कृति का एक आधार सेतु भी बनेगा।

click to watch session video

DELPHIC DIALOGUES

Exploring the spiritual, philosophical & cultural linkage between India & east Asian civilization.

14 मई 2022

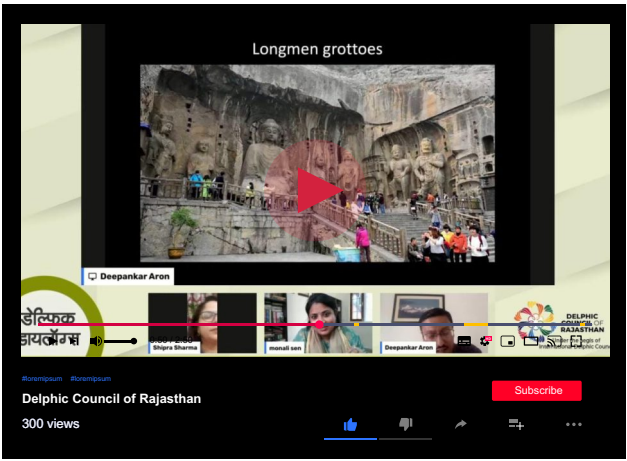

click to watch session video

"भारतीय और पूर्वी एशियाई सभ्यता के बीच आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक संबंधों की खोज" विषयक सत्र में प्रख्यात लेखक दिपांकर एरोन, जो भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी, एक निडर यात्री, लेंसमैन और लेखक हैं, की नवीनतम पुस्तक, 'ऑन द ट्रेल ऑफ बुद्धा: ए जर्नी टू द ईस्ट' पर चर्चा की गई। भारतीय वन सेवा की अधिकारी एवं डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान की सदस्य मोनाली सेन एवं डीसीआर की सदस्य शिप्रा शर्मा के मध्य चर्चा की गई।

मोनाली सेन द्वारा पुस्तक एवं यात्रा वर्णन के बारे में पूछे जाने पर श्री एरॉन ने बताया कि सदा से अध्यात्म, दर्शन और संस्कृति खोज ही मानव का प्रिय विषय रहा है और यह पुस्तक पूर्वी एशिया में बौद्ध धर्म की यात्रा तथा आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक संबंधों की तलाश में एक अद्वितीय प्रयास है जो भारत को पूर्वी एशियाई सभ्यताओं से बांधती है।

श्री एरॉन ने एशिया के भटकते भिक्षुओं से लेकर उनके द्वारा देखे गए मंदिरों और मठों तक; मूर्तियों और भित्तिचित्रों से लेकर संग्रहालयों तक; लोगों की विविध जातियों से लेकर उनके सामान्य देवी-देवताओं के बारे में बताया। उनकी यह पुस्तक उस 'प्राचीन भारत' की खोज करती है, जो चीन,मंगोलिया व कोरिया की परंपराओं, कला और वास्तुकला में खूबसूरती से संरक्षित है। चर्चा में भारत, चीन, मंगोलिया, ताइवान, जापान, सिल्क रोड, हांगकांग के यात्रा वृतांतो एवं इनके आपसी सांस्कृतिक व आध्यात्मिक संबद्धता को रोचक तरीक़े से समझाया किया। बुद्ध से लेकर बोधिधर्म एवं पूर्व एशिया से ऐतिहासिक जुड़ाव के बारे में भी उन्होंने जानकारी दी। कलारिपट्टू और कूँगफु के अलावा चीन एवं गांधीजी के तीन बंदरों से जुड़ें वृतांतों को भी उन्होंने साझा किया। असीम शांति की तलाश में एक छोर से दूसरे छोर तक भिक्षुओं का विचरण, मंदिरों और मठों की संस्कृति, संग्रहालयों में मूर्तियों का दर्शन, भित्तिचित्रों की कलात्मकता, लोक-जीवन के आचार-विचार, रंग-रूप एवं जात-पात से लेकर उनके सामान्य देवी-देवताओं तक के संस्कार यानी प्राचीन भारत की खोज का एक प्रयास किया गया है, जो चीन, मंगोलिया, कोरिया और जापान की परंपराओं, कला और वास्तुकला में खूबसूरती से संरक्षित है। इसे मिली-जुली संस्कृतियों की विविधता में एकता की खोज का एक प्रयास कहना अधिक श्रेयकर है।

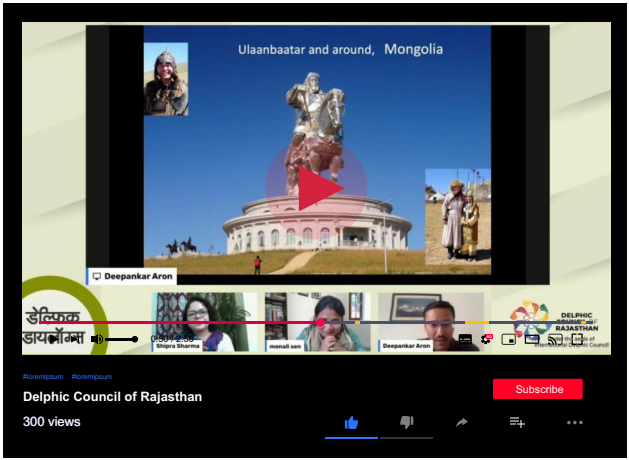

click to watch session video

मूसी महारानी की छतरी पर हुआ 'सिम्फनी ऑफ़ भपंग' कार्यक्रम का आयोजन

27 अगस्त 2022

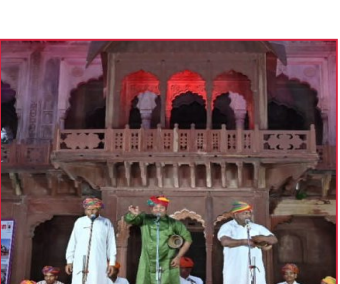

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान द्वारा अलवर जिले की ऐतिहासिक धरोहर मुसी महारानी की छतरी पर राजस्थानी लोक कला को समर्पित "सिम्फनी ऑफ़ भपंग" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध लोक कलाकार यूसुफ खां मेवाती एवं गुप ने भपंग वादन एवं लोक संगीत की मनोरम प्रस्तुती दी।

ज़िला कलक्टर डॉ.जितेन्द्र कुमार सोनी ने कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन कर किया। उन्होंने कहा कि भपंग वाद्य यंत्र मेवात संगीत संस्कृति की धरोहर व राजस्थानी लोक संगीत की पहचान है। वर्तमान में लुप्त होती जा रही लोक कलाओं, गीतों और वाद्य यंत्रों आदि की सहेजने के लिए और नई पीढ़ी को इनसे जोड़ने के लिए यह छोटा सा प्रयास है। उन्होंने कहा कि डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान लगातार कला एवं संस्कृति से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

लोक कलाकार युसुफ खान अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भपंग वादक हैं, जो देश के कई प्रतिष्ठित रंगमंचों पर अपनी प्रस्तुतियां दे चुके हैं। कार्यक्रम में अभिनेता राहुल सूद, पर्यटन विभाग की सहायक निदेशक टीना यादव, पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम, यूआईटी सचिव डॉ. मंजू, सोहन सिंह नरूका, नगर परिषद आयुक्त धर्मपाल जाट, संग्रहालय अध्यक्ष प्रतिभा यादव सहित ज़िला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

DELPHIC DIALOGUES

हिंदी भाषा में डेल्फ़िक डॉक्यूमेंट्री फिल्म का ग्लोबल प्रीमियर लोकार्पित

10 सितंबर 2022

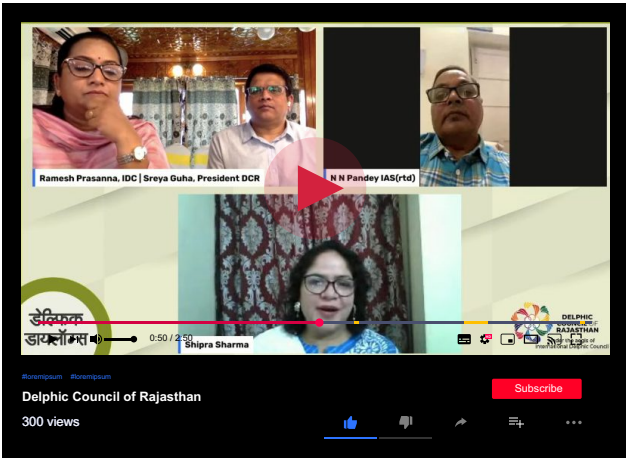

click to watch session video

ऑनलाइन डेल्फ़िक डायलॉग्स के आज आयोजित 33वें सत्र में "डेल्फ़िक मूवमेंट: हिस्ट्री एंड द वे फ़ॉरवर्ड" विषयक सत्र में इंटरनेशनल डेल्फ़िक काउंसिल के महासचिव श्री रमेश प्रसन्ना, इंडियन डेल्फ़िक काउंसिल के अध्यक्ष श्री एनएन पांडे और डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ़ राजस्थान की अध्यक्ष श्रीमती श्रेया गुहा मध्य चर्चा की गई।

श्रीनगर से ऑनलाइन जुड़े इंटरनेशनल डेल्फ़िक काउंसिल के महासचिव श्री रमेश प्रसन्ना ने कहा की ग्रीस से शुरू हुए डेल्फ़िक खेलों का इतिहास 2600 साल पुराना है। कला और संस्कृति का गमन हमारी सभ्यता का अभिन्न अंग है और यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में नैसर्गिक रूप से स्थानांतरित होता रहता है। कला से जुड़े अवयवों को एक साथ प्लेटफॉर्म लाने की पहल ही डेल्फ़िक गेम्स है। अभी तक हुए 7 में से 3 डेल्फ़िक गेम्स में भारत ने हिस्सा लिया है। वर्तमान में विश्व में 72 देश और भारत में 7 राज्य डेल्फ़िक से जुड़े हुए है और जल्द ही भारत के प्रत्येक राज्य में डेल्फ़िक कला का प्रतिनिधित्व करेगा।

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान(डीसीआर) की अध्यक्ष आईएएस श्रीमती श्रेया गुहा ने जानकारी देते हुए कहा की आमजन को डेल्फ़िक काउंसिल के उद्भव और डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान की वर्तमान गतिविधियों को बेहतर तरीक़े से अभिव्यक्त करने हेतु एक 3 मिनिट की डॉक्यूमेंट्री फिल्म को हिंदी भाषा तैयार किया गया है। इसका निर्माण संस्था के ही सदस्य श्री राहुल सूद द्वारा किया गया है।

ऑनलाइन सत्र के आरंभ में ही सभी सम्मानित सदस्यों के मध्य इंडियन डेल्फ़िक काउंसिल के अध्यक्ष श्री एनएन पांडे द्वारा इसका वैश्विक प्रीमियर लोकार्पित किया गया। इस अवसर पर श्री पांडे ने डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान को इस फ़िल्म को हिंदी में बनाने पर आभार व्यक्त करते हुआ कहा की इस फ़िल्म के माध्यम से न केवल राजस्थान वरन समस्त हिंदी भाषी राज्यों में डेल्फ़िक काउंसिल प्लेटफ़ोर्म के बारे में बेहतर समझ विकसित होगी। डेल्फ़िक को क़रीब से जानने का अवसर प्रदान करेगी। इसके साथ ही अन्य राज्य इकाइयाँ भी राजस्थान से प्रेरणा लेकर नए रचनात्मक माध्यमों का सृजन करेगा।

अमृत कलश ब्रेवरी अवार्ड्स (लोगो प्रमोशन)

11 सितंबर 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव के तहत अलवर के महावर ऑडिटोरियम में आयोजित 'अमृत कलश ब्रेवरी अवार्ड्स 2022' में डेल्फ़िक काउंसिल सदस्य सुश्री तेजस्वनी गौतम, आईपीएस के निर्देशन में स्थानीय कलाकारों को कला प्रदर्शन का अवसर प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर डेल्फ़िक काउंसिल की फिल्म की स्क्रीनिंग की गई। कार्यक्रम में जाने-माने बॉलीवुड सिंगर रवीन्द्र उपाध्याय द्वारा प्रस्तुति दी गई।

लोकरंग कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के लोक कलाकारों ने दी मनमोहक प्रस्तुति

24 सितंबर 2022

अलवर के प्रताप ऑडिटोरियम में आयोजित लोकरंग कार्यक्रम में राजस्थान, हरियाणा व पंजाब के कलाकारों अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। ज़िले में लोक-कला, संगीत, संस्कृति और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ज़िला प्रशासन एवं डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में लोकरंग का यह आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान की अध्यक्ष आईएएस श्रेया गुहा ने बताया कि संस्कृति के अनेक आयामों को जीवित रखने एवं नई पीढ़ी के लोगों को इनसे जोड़ने के लिए इस प्रकार के आयोजन डेल्फ़िक काउंसिल द्वारा कराए जाते हैं। ज़िला कलक्टर एवं डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान के सचिव जितेन्द्र कुमार सोनी ने कहा कि इस कार्यक्रम में विशेष रूप से पहली बार उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र पटियाला के लोक कलाकारों ने मनोरम प्रस्तुतियां दी हैं। श्री सोनी ने लोक कलाकारों से मुलाक़ात की और उनका हौसला बढ़ाया। यूआईटी की सचिव डॉ. मंजू व पर्यटन विभाग की सहायक निदेशक टीना यादव ने आगन्तुकों का आभार जताया।

कार्यक्रम मे राहुल बागड़ी ग्रुप ने हरियाणवी लोक कलाकारों के साथ फांग नृत्य, अमरिन्दर सिंह राणा ने भांगड़ा एवं लीला देवी एण्ड लोक कलाकारों की हौसला ने तेरहताली नृत्य की प्रस्तुति दी।

लाइव फोन इन कार्यक्रम डीसीआर अध्यक्ष श्रीमती श्रेया गुहा के साथ, रेडियो पिंकसिटी पर

26 सितंबर, 2022

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान की अध्यक्ष श्रीमती श्रेया गुहा,आई.ए.एस 100.3 रेडियो पिंकसिटी पर श्रोताओं से रूबरू हुई। इस दौरान रेडियो पिंकसिटी की आर.जे. सुषमा ने श्रीमती गुहा से डीसीआर द्वारा कला और संस्कृति के क्षेत्र में किए कार्यक्रमों पर परिचर्चा की। श्रीमती श्रेया गुहा ने कार्यक्रम में डेल्फ़िक के राजस्थान चैप्टर एवं इसकी सदस्यता के बारे में श्रोताओं को जानकारी दी और कार्यक्रम के दौरान पूछे गए श्रोताओं के सवालों के जवाब दिये। चर्चा में लाइव फोन इन द्वारा श्री रमेश प्रसन्ना, श्री जितेन्द्र कुमार सोनी, श्री निशांत जैन, श्रीमती शिप्रा शर्मा सहित अन्य प्रतिभागियों ने भी अपने विचार साझा किए।

Harud: Beautiful Autumn in Kashmir

8-9 Oct 2022

The 2nd National Delphic Summit was organised by the Jammu & Kshmir Delphic Council in collaboration with Kashmir University's Department of Student Welfare. The 2-day event held on 8-9 October 2022 was titled "Harud: Beautiful Autumn in Kashmir", and was under the aegis of the Indian National Delphic Council. The inaugural session was chaired by Prof. Nilofer Khan, VC, Kashmir University addressed the gathering and stressed the harmony in diversity that reflects the Indian Delphic movement.

The chairperson Indian Delphic Council, Shri N.N. Pandey, IAS (retd.) indicated how the Delphic has emerged as a confluence of peace and harmony and a platform for Indian art & cultural diversity.

President DCR, Smt. Sreya Guha, IAS, and executive council member, Smt Monali Sen, IFS represented Rajasthan at the Summit. At the event, president DCR emphasised the Summit's objective of promoting art & culture with involvement of the youth generation countrywide; she also focused on the need of adopting National Bye-laws at the earliest to achieve a higher number of member inclusion and corporate support.

The two-day Summit also saw deliberations on issues of copyrights, patents, artist rights, and publicity, amongst other matters. The cultural event showcasing J&K's folk music, dance, and recitals was a major attraction amongst the participants. The students also put up an open painting arena and local handicrafts stalls, which gained huge appreciation from all participants.

The Summit concluded on a note of planning the 3rd summit in North Eastern India and finalising timelines for the first Indian National Delphic games.

संस्कृति को समर्पित नाद उत्सव का आयोजन

14 अक्टूबर 2022

अलवर ज़िला पुलिस, भारतीय राष्ट्रीय न्यास कला एवं सांस्कृतिक विरासत इंटेक के अलवर चैप्टर और डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में प्रताप ऑडिटोरियम में सुर, ताल एवं संस्कृति को समर्पित नाद उत्सव का आयोजन किया गया।

जिला कलक्टर एवं डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान के सचिव डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने कहा कि वर्तमान में लुप्त होती लोक कला, गीतों एवं वाद्य यंत्रों की संस्कृति को जीवित रखने एवं नई पीढ़ी को इनसे जोड़ने के लिए यह एक छोटा सा प्रयास है। इससे लोक कलाकारों को अपनी कला प्रस्तुत करने का भी बेहतरीन मंच मिला है।

इस अवसर पर साइबर अपराध सुरक्षा पर भी संवाद हुआ। इस दौरान डॉ. सोनी ने बताया कि पुलिस नवाचार के तहत साइबर अपराध सुरक्षा संवाद और महिला व बच्चों के विरूद्ध होने वाले अपराधों की रोकथाम के लिए आमजन को जागरूक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम किये जा रहे हैं।

कार्यक्रम में युवा कलाकार जयंत सिंह राठौड़, पुनित सोनी, केशव कुमावत व भारती मीणा सहित लोक कलाकार सूरज भोपा एंड ग्रुप, कथक नृत्य, लोक देवता भर्तृहरि की कथा व मांड गायन की प्रस्तुतियां दी गई।

DELPHIC DIALOGUE

मीनाकारी से कलाकृतियों को देश-विदेश में मिली पहचान

29 अक्टूबर, 2022

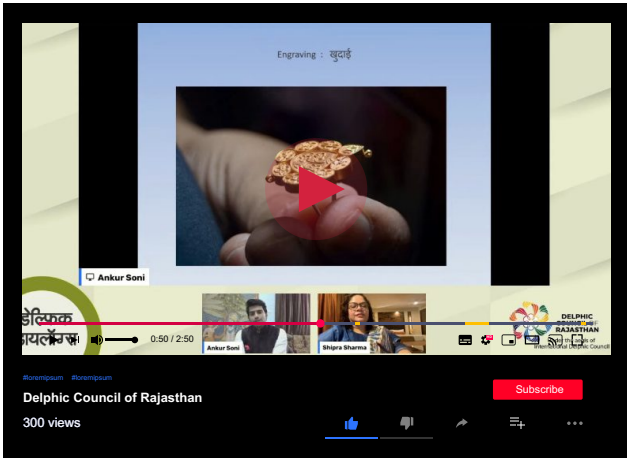

click to watch session video

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान द्वारा कला के विभिन्न आयामों से आमजन को जोड़ने के प्रयास के तहत आयोजित संवाद ऋंखला ऑनलाइन डेल्फ़िक डायलॉग्स के 34वें सत्र का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान की अध्यक्ष आईएएस श्रीमती श्रेया गुहा ने जानकारी देते हुए कहा कि आज आयोजित " भारतीय कला में मीनाकारी का महत्व" विषयक सत्र में कला समन्वयक अंकुर सोनी व डीसीआर कोषाध्यक्ष शिप्रा शर्मा द्वारा चर्चा की गई।

अंकुर सोनी राजस्थान में कला संरक्षक और आभूषण डिजाइनर हैं। वह और उनका परिवार कई दशकों से कुंदन मीनाकारी कारीगरी में अपना योगदान दे रहें हैं। वे कुंदन मीनाकारी के अद्भुत गहने,कलाकृतियों और वस्तुओं का निर्माण कर रहे हैं,।जिनका भारतीय कला में बहुत बड़ा योगदान है। इनके द्वारा "तिजारा ज्वेल्स" नामक एक प्रसिद्ध ब्रांड की स्थापना की गई , जिसमें वे भारत के बाजार और यहां तक कि विदेशी बाजारों के लिए मीनाकारी कलाकृतियां बनाते हैं। उन्होंने इनमेलिंग की प्रक्रिया को प्रदर्शित करने के लिए मीनाकारी कला के लिए बहुत सारी कार्यशालाएँ और प्रदर्शनियाँ कीं।

डेल्फ़िक काउंसिल ऑफ राजस्थान की अध्यक्ष आईएएस श्रीमती श्रेया गुहा ने बताया कि सत्र में भारत की पुरानी विरासत कला में से एक मीनाकारी के बारे में विस्तृत चर्चा की गई। मीनाकारी की भारत में शुरूआत, इसे बनाने की प्रक्रिया और भारतीय कला में मीनाकारी का महत्व और भूमिका पर विशेष व्याख्या की गई।

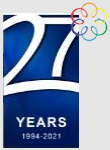

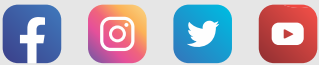

E: info@DelphicRajasthan.org
Room #9, Ground Floor,
Harish Chandra Mathur Rajasthan
Rajya Lok Prasashan Sansthan,
Jawahar Lal Nehru Marg, Jaipur 302017, Rajasthan, India